राजस्थान के झुन्झुनूं जिले में मानव अधिवास वितरण : एक भौगोलिक विश्लेषण

Human settlement Distribution in Jhunjhunu district of Rajasthan : A Geographical Analysis

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

A
Synopsis

Submitted in
Partial Fulfilment for the Degree
Of
Doctor of Philosophy

Submitted to
JV'n Dr. Rabindra Nath
Assitant Prof. Jayoti vidyapeeth
Women's University jaipur

Submitted by
Sunill Kumar
JVR-I/22/10083

Department of

Geography

Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur

2023

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

CERTIFICATE

This is to certify that Synopsis entitled "Human Settlement Distribution in Jhunjhunu District of Rajasthan : A Geographical Analysis" has been undertaken independently by **Sunil Kumar** under my guidance and supervision and it throws more light on the existing knowledge on this subject. This work has been submitted for partial fulfilment of the degree of Ph.D. in Geography and not for any other degree in India or Abroad.

Date : **Dr. Rabindra Nath**

Place : Jaipur

ACKNOWLEDGEMENT

In writing this synopsis, I would like to acknowledge and extend my heartfelt gratitude towards all those who have helped me physically, academically and emotionally and have made the completion of this project possible. This endeavour of mine could not have been successful without some very valuable and well-directed intervention.

A few people in particular have been instrumental in the attempt of my synopsis experience. My first and foremost expressed gratitude would be towards **Dr. Rabindra Nath**, who consented to be my academic supervisor and endlessly shared his wisdom and inspiring teachings whose guidance this project would have been incomplete.

I would like to express my heartfelt gratitude to my all those friends who helped me at every step, for their undying support, valuable advice and motivation to get me going through this project.

And last but not least, a very special thanks to my family especially my parents for their blessings and continuous support and guidance in each and everything.

Sunil Kumar

अनुक्रमणिका

विषय क्रमांक

1.	शोध क्षेत्र का भौगोलिक एवं एतिहासिक परिचय	5-6
2.	प्रस्तावित शोध का महत्व	6
3.	प्रस्तावित शोध का उद्देश्य	7
4.	साहित्य समीक्षा	8-10
5.	शोध अंतराल	10
6.	परिकल्पना	11
7.	शोध विधि तंत्र	11
8.	प्रस्तावित अध्याय	12-15
9.	संदर्भ ग्रंथ सूची	16-22

1 शौध क्षेत्र का भौगोलिक एंव ऐतिहासिक परिचयः—

- झुन्झुन जिला भारत में राजस्थान का एक जिला है इसकी सीमा सीकर, चूरू, जिलों से तथा हरियाणा राज्य से लगती है।
- झुन्झुन जिला दिल्ली से 250 किमी. और जयपुर से 180 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह एक रेगीस्तानी इलाका है पूर्व से पश्चिम सीमा 110 किलोमीटर व उतर से दक्षिण की सीमा 100 किलोमीटर झुन्झुनूं जिला 27॰38′ से 28॰31′ उतरी अक्षांश तथा 75॰02′ 78॰06′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है इसका भौगोलिक क्षेत्र शुष्क है। यह जिला जयपुर संभाग में स्थित है। तथा इसका कुल क्षैत्रफल 5928 वर्ग किमी. है।
- झुन्झुन जिला अधिकांशतः अरावली पर्वत के पूर्वी तक ही समिति है। जिले के दक्षिण पूर्वी हिस्से में अरावली पर्वत की पर्याप्त उपस्थिति है। झुझुनूं जिले की भौगोलिक विशेषताओं को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(I) दक्षिण पूर्वी पर्वतीय भाग

(II) छोटी—छोटी विभिन्न पहाड़ियों वाला लहरदार दक्षिण पश्चिम भाग

(III) उतरी भाग जैसा मैदानी रेगीस्तान क्षैत्र

- पूर्व में यह हरियाणा के साथ सीमा बनाती है। इस पर्वत श्रृंखला की तलहटी में कई धार्मिक महत्व के स्थान स्थित है। 28॰03′ 39॰47′ उतरी आक्षांश और 76॰01′ 52॰36′ पूर्व देशान्तर पर स्थित 'थोसी' पर्वत यहां की एक महत्वपूर्ण चोटी है यह एक विलुप्त ज्वालामुखी है जिसके शीर्ष पर विशिष्ट ज्वालामुखी है।

झुन्झुनू मिट्टी

- झुन्झुनू की स्थलाकृतिक विशेषताओं में अधिकतर ढीले या स्थिर रेत के टीलों वाले लहरदार मैदानों द्वारा दर्शायी जाती है यह रेत के टीले 36% भूमि पर है इसके अन्तर्गत 45% मिटटी मरूस्थलीय प्रकार की है 8% मरूस्थलीय प्रकार की है और 6% पहाड़ियों की लिथोसोल और रगोसिल है केवल 5% मिटटी पुराने जलोढ प्रकार की है।

झुन्झुनू में जल निकाय

- झुन्झुन में कोई बारहमासी नदी नहीं है। हांलाकी जिले के मुख्य रूप से एक मौसमी नदी है। जिसे कांटली/कातली नदी कहते है। यह नदी सीकर जिले के खण्डेला की पहाड़ियों से निकलकर झुन्झुन में प्रवाहित होती है। पानी की अधिकतर मात्रा वर्षा पर निर्भर करती है।

झुन्झुनू में कृषि

अर्द्ध रेगिस्तानी स्थिति के बावजूद जिले में 6463.23 वर्ग किमी. खेती योग्य भूमि है। इसमें 395.27 वर्ग किमी. की वन क्षेत्र भी है यहां उगाई जाने वाली प्रमुख फसले बाजरा, गेंहू, जौ, ज्वार, तिलहन अनाज आदी है। सिंचाई ज्यादातर खोद गये कुओं ट्यूबवेलों और बोरवेलो द्वारा की जाती है, हालांकि तालाब और **नहरें** भी **सिंचाई** के लिए पानी उपलब्ध करवाती है।

जलवायु की स्थिति

झुन्झनू एक रेगिस्तानी क्षेत्र है **यंहा** की जलवायु बहुत ही कठोर है सर्दियों में तापमान 0डिग्री सेल्सियस **से नीचे चला जाता है जबकि गर्मियों में तापमान** 48 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो **जाता** है गर्म महिनों के दौरान गर्म हवा चलती है जिसे लू कहा जाता है वार्षिक वर्षा 450 से 600 मिमी तक होती है।

झुन्झुनू शहर का भूगोलः–

झुन्झुनू शहर 29॰6′ उतरी अक्षांश और 75॰25′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है और इसका कुल क्षेत्रफल 9.64 वर्ग किमी है यहा का भू–भाग लहरदार है कान्हा पहाड़, काली पहाड़ी मोडा पहाड़, जैसी कुल पहाड़ियां शहर में और इसके आसपास स्थित है। तीन पहाड़ियों में कान्हा पहाड़ सबसे महत्वपूर्ण है यह शहर इसी पहाड़ की छाया में स्थित है। कमरूद्धीनशाह की प्रसिद्ध दरगाह भी इसी पहाड़ी के दक्षिण में स्थित है। इस दरगाह के पूर्व में काली पहाड़ी स्थित है। दूसरी और मोडा पहाड़ शहर के सूदर उतर में स्थित है। अजीत सागर एक मानव निर्मित झील है। इस पहाड़ी की तलहटी में स्थित है।

2. प्रस्तावित शोध का महत्वः–

- प्रस्तावित शोध का विषय है झुन्झुनू जिले में मानव अधिवास व जनसंख्या वितरण है इस क्षेत्र में अध्ययन के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र शहरी क्षेत्र के मानव अधिवास वितरण तथा जनसंख्या वितरण से संबंधित क्षेत्र का अध्ययन करेगें।
- झुझनू जिला विभिन्न प्रकार की भौगोलिक दशाऐं रखता है। इस कारण वहां पर मानव अधिवास व जनसंख्या वितरण का विभिन्न प्रकार का स्वरूप पाया जाता है। अर्थात कहीं पर अधिक सघन अधिवास व कहीं पर अर्द्धसघन अधिवास पाये जाते है। इस प्रकार जनसंख्या के लिए न्यूनतम

दर पर आवास उपलब्ध करवाना, स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाना तथा रोजगार उपलब्ध करवाना मुख्य उदेश्य होगा।

3. प्रस्तावित शोध का उद्धेश्य–

- झुन्झुनू जिले में मानव अधिवास व जनसंख्या वितरण का अध्ययन करना ही मुख्य उदेश्य रहा है। इसके साथ ही अध्ययन का मुख्य उदेश्य है।

1 झुन्झुनू जिले के मानव अधिवासो एवं जनसंख्या वितरण के पक्षों का अध्ययन करना।

2 भौतिक पर्यावरण व मानव अधिवास वितरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

3 झुन्झुनू जिले के भौगोलिक कारको का मानव अधिवास व जसंख्या वितरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना

4 वर्तमान मानव अधिवास व जनसंख्या वितरण में क्षैत्रीय विषमताओं का विश्लेषण करना।

5 क्षेत्र में से मानव अधिवास व जनंसख्या से सम्बधित समस्याओं का अध्ययन करना।

6 क्षेत्र में मानव अधिवास व जनसंख्या से सम्बधित समस्याओं के निराकरण के लिए सुझाव देना।

4. साहित्य समीक्षाः—

किसी देश में आबादी और बस्तियों का स्थानिक वितरण और उनकी परस्पर **संयोजकता** और पहुंच, शहरी क्षैत्र स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने, संसाधनों के वितरण एवं आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है

भूगोलवेताओं ने नगरीय व ग्रामीण अधिवास के वितरण, बस्तियों की संरचना बसाव स्थल व बसाव स्थिति, अधिवासो के वितरण प्रतिरूप तथा पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है।

शोध कार्य की तथ्यात्मक एंव विषयगत अध्ययन के लिए शौध लेखों को प्रादेशिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किये गये शौध अध्ययन को प्रस्तुत किया है।

भारत में 32.8 लाख वर्ग किलोमिटर क्षेत्र में लगभग 649000 गांवो में मानव अधिवास समूह को बुनियादी सुविधाए उपलब्ध करवाना सरकार के लिए चुनौति तथा अवसर है, इन सुविधाओ में सड़क, आवास, पानी, बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मुलभूत आवश्यकताए उपलब्ध करवानी है।

भारत सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों को मुख्य सड़क मार्गो से जोड़ने हेतु विशेष कार्य करने की आवश्यकता है।

<u>अन्तर्राष्ट्रीय स्तर</u>

पैंग, यू एवं वांग, क्यू (2020) ने अपने शोध अध्ययन में चीन के आन्तरिक मंगोलिया प्रांत के देहाती, कृषि एवं इकोटोन क्षेत्रों में अधिवासों के स्थानिक वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण किया है। शोध में लेखकों ने बताया कि इन क्षेत्रों में ढलान समान होते हुए भी ऊंचाई में अन्तर पाया गया है, जिसके कारण पर्यावरणीय परिस्थितियाँ भिन्न—भिन्न भागों में अलग—अलग पाई गई है। इन स्थितियों ने अधिवासों के प्रतिरूपों को प्रभावित किया है। शोधार्थियों ने परिकल्पित किया है कि अधिवासों के वितरण प्रतिरुप में अलग—अलग क्षेत्रों में विविधता पाई गई है। ग्रामीण भूदृश्य में ग्रामीण अधिवासों का अत्यधिक महत्व है। इस शोध में विधितंत्र के रूप में सुदूर संवेदन चित्रो, डिजिटल इलेवेसन मोडल तथा जीआईएस तकनीक का अनुप्रयोग आकड़ो का विश्लेषण करने में किया गया है। साथ ही मात्रात्मक तकनीक, वोरोनोई मोडल, भूदृश्य मैट्रिक तथा इवान्स एवं क्लार्क द्वारा विकसित निकटतम पड़ौसी विश्लेषण तकनीक का भी अनुप्रयोग किया गया है। इस आधार पर इन्होंने बताया कि कृषि क्षेत्रों में गुच्छित अधिवास तथा देहाती क्षेत्रों में नियमित अधिवास प्रतिरुप पाये

गये हैं। सम्पूर्ण रूप से स्थानिक वितरण प्रतिरूप यादृच्छिक पाया गया है। निष्कर्ष रूप में बताया कि अधिवासों के स्थानिक प्रतिरुप को नदी एवं सड़क ने बहुत अधिक प्रभावित किया है।

ताबुन्सिक वी.ए. (2020) द्वारा किये गये शोध पत्र में क्रिमिया के मानव अधिवासों का ऊँचाई के आधार पर विश्लेषण किया है। ऊंचाई के आधार पर भूदृश्यों को चार भागों (जलाकृतिक, निम्न पर्वतीय क्षेत्र, मध्यम पर्वतीय क्षेत्र तथा आन्तरिक पठारी भूदृश्य) में बाँटा गया है। ऊंचाई के विश्लेषण में उपग्रहीय चित्रों तथा क्वाटम जीआईएस के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। ग्रामीण एवं नगरीय अधिवासों दोनों का ही विश्लेषण ऊंचाई के आधार पर किया गया है। अध्ययन में स्पष्ट किया गया कि क्रिमिया गणराज्य के अधिवासों को ऐतिहासिक एवं भौगोलिक कारको ने तो प्रभावित किया ही है, साथ ही समुद्र तल से ऊँचाई ने अधिवासों को अत्यधिक प्रभावित किया है। उन्होंने यह भी बताया कि जलाकृतिक भूदृश्यो में अधिवासी का संकेन्द्रण अधिक पाया गया है जबकि मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में अधिवासीय संकेन्द्रण सबसे कम पाया गया है। शोध निष्कर्ष से स्पष्ट है कि समुद्र तल से न्यूनतम ऊंचाई में (600 मीटर तक) नगरी का बहाव अधिक पाया गया है जबकि ग्रामीण अधिकस इससे भी दुगुना ऊँचाई तक पाए गए हैं। लेखकों ने बताया कि क्रिमिया गणराज्य में अधिक की परस्पर सुगम्यता को बढ़ाने तथा आर्थिक विकास हेतु इस शोध की प्रासंगिकता है। इन्होंने बताया कि अधिवासी की पारस्परिक सुगम्यता से आर्थिक कम होगे तथा यह शोध क्रिमिया के आर्थिक विकास में सहयोगी होगी।

<u>राष्ट्रीय स्तर</u>

नोटियाल जी, मैथानी एस एवं शर्मा ए. (2020) ने अपने शोध पत्र “Study of Urban Growth Dynamics Using Global Human Settlement Layer Data Set : Uttarakhand, India” में सुंदर संवेदन के माध्यम से परिवर्तनशील मानव अधिवासो का अध्ययन किया है। शोध में स्पष्ट किया गया है कि पिछले 4 दशकों में हिमालय राज्य उत्तराखण्ड के शहरी विकास की गत्यात्मकता पर क्या प्रभाव पड़ा। साथ ही अधिकास प्रकार तथा अधिवासों पर भौगोलिक कारकों का अध्ययन भी किया गया है। निष्कर्ष रूप से बताया कि अधिवासों पर जलवायु एवं धरातलीय प्रभाव के कारण सामयिक परिवर्तन होता है।

चौधरी, सुरेश (2017) ने शोध अध्ययन ''महाराष्ट्र के धुले जिले में नगरीय अधिवासो का भौगोलिक परिप्रेक्ष्य'' में बताया कि नगरीकरण वर्तमान समय की एक मुख्य अवस्था है। नगरीय गन्दी बस्तियों में गरीब जनसंख्या की आधारभूत सुविधाओं की कमियों को भी उजागर किया है। लेखक ने अपना शोध कार्य को

नौ अध्याय में विभाजित कर सम्पूर्ण किया है। शोध अध्ययन में नगरीय क्षेत्रों में आधारभूत आवश्यकताओं एवं सुविधाओं पर विस्तार से की है। जिसमे संचार साधना, शिक्षा का स्तर, स्वास्थ्य दशाएँ, बैंकिंग एवं बाजारीय सुविधाओं का जिक्र किया तथा नगरीय केन्द्रों की समस्याओं पर जोर दिया है। नगरीय क्षेत्रों में बेरोजगारी, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं के साथ ही जलापूर्ति की मुख्य समस्याओं पर ध्यानाकर्षण किया है। शोध अध्ययन में 'स्लम बस्ती' पर विस्तार से प्रकाश डाला है। जिसमे स्लम बस्ती के कारण क्या है? तथा भारतीय नगरों की गंदी बस्तियों पर भी ध्यानाकर्षण किया है। निष्कर्ष रूप में बताया कि नगरीय क्षेत्रों को नियोजित रूप से बचाना चाहिए तथा कई आधारभूत सुविधाओं में नवीकरण नवाचारों की आवश्यकता है।

प्रादेशिक स्तर

सिंह, जी. एवं कुमार, एस. (2018) इस शोध में यह बताया गया कि अधिवास भूगोल, भूगोल विज्ञान का एक नया अंकुरित भाग है। इन्होंने अपने अध्ययन क्षेत्र की उपयोगिता बताते हुए कहा कि यह क्षेत्र सरसों की फसल के लिए प्रसिद्ध है, यहाँ तेल आधारित उद्योगों के विकसित होने की प्रबल सम्भावना है जिस कारण यहाँ बेरोजगारी घटेगी एवं विकास सुचारु रूप से होगा। इसलिए इन्होंने बताया कि यह अध्ययन भूआकृतिक विभेदन, स्थानिक प्रतिरूप एवं ग्रामीण अधिवासों के वितरण पर ध्यानाकर्षण करता है। भूआकृतिक दृष्टि से इन्होंने अपने क्षेत्र को मरु, मेरु एवं माल तथा मैदान में से मैदान में अवस्थित बताया। शोध के परिचय भाग में यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर को भी उजागर किया है। इनका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण अधिवास एवं सामाजिक समूहों में पारस्परिक सम्बन्धों को बताना है। इस शोध में ग्रामीण अधिवासों का आकार जनसंख्या के आधार पर विभाजित कर अध्ययन किया है। साथ ही गाँवों की स्थानिकता भी ज्ञात की एवं गाँवों को स्थानिकता के आधार पर चार भागों में विभाजित किया फैलाव को भी चार भागों में बाटकर अध्ययन किया। अधिवासों के चारों प्रकारों को भी इस अध्ययन में बताया कि कहाँ कौनसा प्रकार है।

5. शोध अंतराल

मानव अधिवास वितरण व जनसंख्या से संबंधित अध्ययनों के विश्लेषण के द्वारा यह ज्ञात होता है कि मानव अधिवास वितरण व जनसंख्या आज का मुख्य विषय है। सभी संबंधित क्षेत्रों में मानव अधिवास वितरण का अध्ययन किया गया है। मेरे शोध का विषय राजस्थान के झुझनू जिले में मानव अधिवास वितरण : एक भौगोलिक विश्लेषण है। इसी परिपेक्ष्य में वर्तमान में इन अधिवासो व जनसंख्या वितरण में क्या बदलाव हो रहा है तथा ऐसी कौन सी योजनाएं हैं जिसके द्वारा इनका सामाजिक स्तर ऊंचा उठ सके इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संबंधित

साहित्य पर बहुत शोध कार्य हो चुके हैं। और लगातार अग्रसर हैं यह शोध कार्य भविष्य में हो रहे ग्रामीण परिवेश में बदलाव तथा उनकी समस्या एवं समाधान के लिए सहायक सिद्ध होगा। साथ ही भविष्य में होने वाले शोध कार्यों के लिए पृष्ठभूमि प्रदान करेगा।

6. परिकल्पना

शोध से संबंधित अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया। एवं संबंधित निष्कर्ष निकाले गए।

शोध क्षेत्र में मानव अधिवास वितरण व जनसंख्या से संबंधित विषमताओं के अध्ययन का क्षेत्र रहेगा शोध क्षेत्र के मानव अधिवास वितरण व जनसंख्या में विकास यहा के भौतिक व सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है

7. शोध विधि तंत्र

प्रस्तावित शोध झुझनू जिले के समस्त भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर होगा शोध का प्रारूप वर्णनात्मक अन्वेषण एवं तुलनात्मक प्रकार का होगा। जिसमें प्राथमिक द्वितीयक आकड़ों का प्रयोग किया जाएगा।

प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण क्षेत्र सर्वेक्षण इससे अनौपचारिक साक्षात्कार परिचर्चा व अनुसूचियां आदि के माध्यम से स्थानीय जन एवं विभिन्न संगठनों से बात करके संबंधित शोध के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

द्वितीयक आंकड़ों को शोध पत्र पुस्तकों, नियतकालीन जर्नल प्रकाशित प्रतिवेदन विभिन्न सरकारी विभागों तथा अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेजों आदि से प्राप्त कर सकेगें। आकड़ों का प्रदर्शन सांख्यिकी विधिया जैसे तालिका आदि के माध्यम से करेगें।

8. प्रस्तावित अध्याय

अध्याय 1 : परिचय (Introduction)

1.1 परिचय (Introduction)

1.2 शोध समस्या के सम्बन्ध में विचार
(Statement About the Research Problem)

1.3 शोध का महत्व (Importance of Research)

1.4 अध्ययन क्षेत्र (Study Area)

1.5 शोध के उद्देश्य (Objective of Research)

1.6 परिकल्पनाएँ (Hypothesis)

1.7 साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

1.7.1 अनतर्राष्ट्रीय स्तर

1.7.2 राष्ट्रीय स्तर

1.7.3 प्रादेशिक स्तर

1.8 विधि तंत्र (Methodology)

1.9 आँकडों के स्त्रोत (Sources of Data)

1.10 शोध की सार्थकता (Significance of the Study)

1.11 अध्याय क्रम (Chapter Scheme)

सन्दर्भ ग्रन्थ (References)

अध्याय 2 : झुझनू जिले की भौगालिक रूपरेखा
(Geographical Profile of Jhunjhunu)

2.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

2.2 झुझनू जिले की भौगोलिक अवस्थिति
(Geographical Location of Jhunjhunu District)

2.3 मानव अधिवासों के वितरण पर भौगोलिक कारकों का प्रभाव
(Impact of Geographical Factors on Distribution of Human Settlements)

2.3.1 भू–गर्भिक संरचना (Geological Structure)

2.3.2 उच्चावच स्वरूप (Relief Features)

2.3.3 अपवाह तंत्र (Drainage System)

2.3.4 मिट्टी की संरचना (Soil Structure)

2.3.5 जलवायु (Climate)

2.4 प्राकृतिक वनस्पति (Natural Vegetation)

2.5 जैविक समूह (Bio Mass)

2.6 खनिज संसाधन (Minerals)

2.7 उद्योग (Industry)
2.8 पर्यटन (Tourism)
निष्कर्ष (Conclusion)
सन्दर्भ ग्रन्थ (References)

अध्याय 3 : जनसंख्या संरचना (Demographic Structure)

3.1 पृष्ठभूमि (Background)
3.2 जनसंख्या वृद्धि (Population Growth)
3.3 जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व
(Population Distribution & Density)
3.4 लिगांनुपात (Sex Ratio)
3.4.1 ग्रामीण लिगांनुपात
3.4.2 नगरीय लिगांनुपात
3.5 साक्षरता (Literacy)
3.5.1 कुल साक्षरता
3.5.2 ग्रामीण साक्षरता
3.5.3 नगरीय साक्षरता
3.6 व्यवसायिक संरचना (Occupational Structure)
3.6.1 कार्यशील जनसंख्या
3.6.2 सीमान्त कार्यशील जनसंख्या
3.6.3 अकार्यशील जनसंख्या
3.7 जातीय संरचना (Caste Structure)
3.7.1 ग्रामीण अनुसूचित जनजाति
3.7.2 नगरीय अनुसूचित जनजाति
3.7.3 ग्रामीण अनुसूचित जाति
3.7.4 नगरीय अनुसूचित जाति
3.8 निष्कर्ष (Conclusion)
सन्दर्भ ग्रन्थ

अध्याय 4 : मानव अधिवासों की उत्पति, वृद्धि एवं विकास
(Evolution, Growth and Development of Human Settlement)

4.1 पृष्ठभूमि (Background)
4.2 प्रागैतिहासिक काल (Pre-Historical Period)
4.3 ऐतिहासिक काल (Historical Period)
4.4 प्राचीन काल (Ancient Age)
4.5 मध्ययुगीन काल (Medival Age)

4.6 ब्रिटिश काल (British Age)
4.7 स्वतंत्र भारत (Independent India)
4.8 ग्रामीण अधिवासों के स्थान नाम
4.8.1 झुन्झुनू तहसील
4.8.2 बुहाना तहसील
4.8.3 चिड़ावा तहसील
4.8.4 मण्डावा तहसील
4.8.5 मलसीसर तहसील
4.8.6 सूरजगढ़ तहसील
4.8.7 नवलगढ़ तहसील
4.8.8 गुढागोदजी तहसील
4.8.9 बिसाऊ तहसील
4.8.10 पिलानी तहसील
4.9 निष्कर्ष
सन्दर्भ ग्रन्थ

अध्याय 5 : मानव अधिवासों का वितरण

(Distribution of Human Settlement)

5.1 पृष्ठभूमि (Background)
5.2 अधिवासों को प्रभावित करने वाले कारक
5.3 जनसंख्या आकार वर्ग के आधार पर ग्रामीण अधिवास एवं जनसंख्या वितरण
5.3.1 झुन्झुनू तहसील
5.3.2 मण्डावा तहसील
5.3.3 मलसीसर तहसील
5.3.4 बुहाना तहसील
5.3.5 सूरजगढ़ तहसील
5.3.6 गुढ़ागौड़जी तहसील
5.3.7 चिड़ावा तहसील
5.3.8 नवलगढ़ तहसील
5.3.9 पिलानी तहसील
5.3.10 बिसाऊ तहसील
झुझनू जिले में आकार वर्ग के आधार पर ग्रामीण अधिवासों का वितरण
5.4 मानव अधिवासों का स्थनिक विस्तार, औसत आकार एवं घनत्व
5.5 नगरीय अधिवासों का वितरण (Distribution of Urban Settlement)
5.6 नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण
(Functional Classification of Urban Centre)
5.7 नगरीकरण का स्तर (Levels of Urbanisation)
निष्कर्ष
सन्दर्भ ग्रन्थ

अध्याय 6 : प्राथमिक स्तर पर क्षेत्रीय अध्ययन एवं आंकड़ों का विश्लेषण

(Primary Survey of Study Area and Data Analysis)

6.1 पृष्ठभूमि (Background)

6.2 अधिवासों का विश्लेषण (Analysis of Human Settlement)

6.2.1 पहाड़ी क्षेत्रों में मानव अधिवासों का वितरण

(Distribution of Human Settlements in hilly Areas)

6.2.2 मैदानी क्षेत्रों में मानव अधिवासों का वितरण

(Distribution of Human Settlements in Plain Areas)

6.2.3 असमतल धरातलीय क्षेत्र में मानव अधिवासों का वितरण

(Human Settlement Distribution in Undulating Areas)

6.3 प्राथमिक स्तर पर क्षेत्रीय सर्वेक्षण

(Field Survey of Primary Level)

6.4 विभिन्न चरों की प्रकृति का विश्लेषण

(Analysis of Nature of Various Variables)

6.4.1 निर्भर चर (Dependent Variables)

6.4.2 स्वतंत्र चर (Independent Variables)

6.5 सह–सम्बन्ध मैट्रिक्स (Co-relation Natrics)

6.6 प्रतीपगमन विश्लेषण (Regression Confficient)

6.7 काई वर्ग परीक्षण (Chi Square Test)

6.8 सारांश (Conclusion)

अध्याय 7 : निष्कर्ष एवं सुझाव (Conclusion & Suggestions)

7.1 जिला झुन्झुनू : जलवायु दशाएं

7.2 जिला झुन्झुनू : औसत वार्षिक वर्षा मि.मि.

7.3 जिला झुन्झुनू : दशकीय जनसंख्या वृद्धि 1901–2011

7.4 जिला झुन्झुनू : तहसील अनुसार जनसंख्या घनत्व 2001–2011

लिगांनुपात 2011, साक्षरता दर 2011, व्यावसायिक संरचना 2011 प्रतिशत में,

जातिय संरचना 2011,

9. संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography)

1. Anderson, D.G. (1991). Examining prehistoric settlement distribution in eastern north America. Archaeology of Eastern North America, 19, 1-22. URL : http://www. jstor.org/stable/40914327.

2. Aziz, A.N. (2017). Surviving in Cairo as a closed file Refugee. IIED,London,

3. Binda, V. (2017). Spacing of rural settlements in Nagaur district, Rajasthan Journal of Global Resources, 5, 28-13.

4. Balakram (2001). Watershed development and management in arid western Rajasthan. Journal of Global Research, 07, ISSN 23953160.

5. Balasubramanian, A. (2015). Human settlement system. EMRC, University of Mysore. 1-9. https://www.researchgate.net/publication /310021451.

6. Brunhes, J. (1920). Human Geography, Rand McNaluy, 648.

7. Camagni, R., Capello, R. and Nijkamp, P. (1998). Towards sustainable city policy : An economy-environment technology nexs. Ecological economics, 24, 103-118.

8. Chandrasekhara, C.S. (1978). Human settlements in India- A perspective. Habitat Internatioonal, 3(3/4), 341-352.

9. Carter, G.F. (1975). Man & the Land : A Cultural Geography (3rd Ed.). Holt: Rinehart and Winston, New York.

10. Casana, J. (2007). Structral transformation in settlemnt systems of the northern Levant. American Journal of Archaeology, 111, 195-221. URL: http://www. jstor.org/stable/4003727238

11. Chisholm, M. (1962). Rural Settlement & Land Use. Transanction Publishers, New Jersey.

12. Choudhary, Suresh Bhika (2017). Geographical study of urban settlements in Dhule district Maharashtra. Shri Jaydishprasad Jhabarmal Tibrewala University. URL: https//hdl.handle.net/10603/

198944

13. Das. N.R. & Kumar, S. (2014). Human development status of marginalised tribal gap in industrialised state of India: A case of Gujarat. Annals, XXXI, 1-14.

14. Danish, M. (2002). Evolution & spatial organization of clan settlement in Bartpur district, Rajasthan. Aligarh Musliim university Department of Geography. URL : http: //hd/handle. net/ 10603/52651

15. Drobnjakovic, M. (2019). Methodological of typological classification in the study of rural settlement in Serbia. J. Geogr. Inst. Cvijic., 69(2), 157-173.

16. Farooki, S. M. and Azad, A. P. (2013). Impact of flood hazard on settlement distribution pattern on active flood plains of CHEJ interfluves Punjab, Pakistan (1951-1998). IOSR-JHSS, 9, 01-07.

17. Gavasker, K.K. (2016). New forms of urban development: An overview of 'Smart Cities' pradigm in India's urban policy. Annals, NAGI, XXXVI, 2, 12-19.

18. Gerasimov, I.P. (1986). Geographical Prognostication Problems and Prospects. Progress Publishers, Moscov.

19. Group, 9. (2011). Settlement pattern in Grahamstown; Are they sustainable. Environment Science 302, 1-38.

20. Hudson, F.S. (1976). A geography of settlement (2nd ed.). Macdonald & Evans Ltd.

21. Hadule, S.G. (2017). Spatial analysis of rural settlements in Latur district: A geographical appraisal Maharastra. Swami Ramanand Terth Marathwada University. URL: - http://hdl.handle. net/10606/188854

22. Haggett, P. (1977). Locational analysis in human geography. John Wiley & Sons, New York.

23. Karl, M. (1975). Economic & philosophic manuscriptr of 1844 in Karl

Marx & Fredric Angels collected works. Progress Publishers Moscort, 3, 276.

24. Khatna, R.P. (1994). Towards a methodology for the transhumance geography in the Thar Desert & Arawali Hills. RGA, XXIV, P. Conf. 115-118.

25. Kumbhar, A.P. (1984). A Study of Rural Settlement in Nira valley. Shivaji University, M.H. URL: http://hdl handle. net/10603/140090

26. Kumar, R. (2010). Urbanisation in Rajasthan 1901-2001: A demographic reappraisal. Annals, XXVII, 139-146.

27. Kumari, L. and Singh, V. (2017). Siting and patterns of rural settlements in Aravallis of Rajsamand and Bangar plains of Pali in Rajasthan. Remarking An Analisation, 2, 20-24.

28. Leela and Singh, V. (2013). Rural dwellings in Bangar & Aravali regions of Rajasthan. Annals, XXX, 89-93.

29. Linard, C. (2012). Population distribution, settlement pattern and accessibility across Africa in 2010. Plos one, 7(2); e31743.doi:10. 1371/ journal.pone.0031743.

30. Linard, C. (2013). Modelling spatial patterns of urban growth in Africa. HHS Public Access: Appl.Geogr., 44, 23-32.

31. Mallanna, C. (2006). Spatial pattern of rural settlement in Kodagu District (Karnatak). Karnatak University, Published thesis. URL: http:// hd. handle. net/10606/108046

32. Matijevic, M. (2005). Recent development of rural settlements in northern part of Belgrade periurban space. Geographical Institute "Jovan Cvijic" SASA, 54, 75-86.

33. Mishra, V. N. (2010). Prehistoristic human colonies of India. Indian Academy of Science, 26, 491-531.

34. Mumford, L. (1938). The Culture of Cities. Harcowd, Brace & Co., New York.

35. Munzwa, K.M. and Wellington, J. (2010). Urban development in Zimbabuse: A human settlement perspective. Theortical & Empirical Researches in Urban Management, 5(14), 120-144.

36. Nautiyal, G., Maithani, S. and Sharma, A. (2020). Study of Urban Growth Dynamics Using Global Human Settlement Layer Data Set : Uttarakhand, India. Journal of Indian Society Remote Sensing, 48, 817-827. https:// doi.org/10.1007/512524-020-01115-6.

37. Poonia, K., Poonia, M. and Bhakar, R. (2009). Road accessiblity and its role in rural development : A case study of Rajasthan, Annals, XXVI, 105-114.

38. Peng, Y. and Wang, Q. (2020). Spatial distribution & influencing factors of settlements in the farming – pastoral ecotone of Inner Mongolia, China. Ecosystem, Health & Sustainability, 6(1), 1771213, 1-8. https://doi.org/ 10.080/20964129.2020.1771213.

39. Rathod, G.S. (1970). Luni Besin me gramin bastiyon ki sthiti Evam bnavat. Pro. Sammelan, 36, 55-62.

40. Richthofen, V. (1903). China : The Result of my Travels and the Studies based thereon. The Prussian Kulturministerium.

41. Robinson, J. M. (2002). The Cultural Landscape : An Introduction to Human Geography. Prentice Hall Upper Seddle River.

42. Rao, N. (2019). Managing risk, chaning aspiraton and household dynamics: Implication for wellbeing and adpatpation in Semi-arid Africa & India. Word Develpoment, 125, 1-15.

43. Roy, M. (2009). Planning for sustainable urbanisation in fast growing cities: Mitigation & adaptation issues addresed in Dhaka, Bangladesh. Habital International, 33 (3), 276-286.

44. Satni, V. (2007). Pattern of urbanization in western Rajasthan. Annals, XXIV, 49-56.

45. Sankhare, S. N. (2015). A geographical study of spatial distribution of rural settlement in Jalana Distric. Dr Babasaheb Amedker Marathwada University. URL: http: /hd/. handle. net. /10603/54430. 42

46. Schumacher, E.F. (1976). Pattern of human settlement. Springer on Behalf of Royal Swedish Academy of Selences, 5(3), 91-97. URL: http: //www.jstor. org/stable/93/2/85.

47. Suer, C. O. (1925). The morphology of landscape, Berkeley. University of California Publications in Geography, 2(2), 119-126.

48. Sen, L. (2011). The application of urban sustainability indicator- A comparison between various practice. Habitat International, 38(1), 17-29.

49. Sharma, P. K. (2015). Regional disparity in socio- economic development of Jaisalmer district (Rajasthan). The Deccan Geographer, 53, 23-28.

50. Sharma, P. K. (2015). Micro- level appraisal of spatial dimensions of rural settlements. IIRG, 1, 18.21.

51. Sharma, R.C. (1972). Settlement Geography of the Indian Desert, Rajes Publications Safdarganj Development, Hauz Khas, New Delhi, 16.

52. Singh, J. B. and Chauhan, K. (2006). Environment impact on ural settlement: A case study of shekhawati region. Annals, XXII, 37-48.

53. Singh, N. (2016). Mapping urban privecy patterns in India 2016. NAGI, XXXI.

54. Singh, N. & Kumar, J. (2012). Urban growth & its impact of cityscape: A geospatial analysis of Rohtak city, India. Journal of Geographic Information System, 4 (1), 8-17.

55. Singh, S. (2012). Changing pradigms of river valley settlementskrishna river valley. IRJC, V, City pradigms in India urban policy. Annals, 2, 55-63.

56. Singh, R.L. (1972). Rural Settlements in Monsoon Asia, Varanasi : Nat. Geographical Soc. of Inida.

57. Singh, R. Y. (2005). Geography of Settlements. Rawat Publications, Jawahar Nagar, Jaipur.

58. Singh, G. and Kumar, S. (2018).Spatial distribution and types of rural settlements of Nadbai tehsil. IJCRT 1812015, 6, 126-133.

59. Small, C. and Nicholls, R. J. (2003). A global analysis of human settlement in coastal zones. Journal of Coastal Research, 19(3), 584-599. ISSN 0749-0208.

60. Tabunshchyk, V.A. (2020). Urban and rural settlements distribution of the republic of Crimea by absolute altitudes. IoP Conference Series Materials Science and Engineering, 753, 022063. doi:10.1088/1757-899X/753/2/ 022063

61. The Member of SARG (1974). A co-operation approach towards understanding the locations of human settlement. World Archaeology, Vol. 1, Published by Toylor & Francis Ltd.

62. Vyas, P.R. (2002-2003). Nature of tribal habitation and interaction with service centres. Annals of RGA, XXX-XX, 61-71.

63. Vyas, P.R. (1998). Problem & prospects of tribal settlements " A study of Jhadol-Kotra area of south Aravali. RGA, P. XXVII, Conf., 24-27.

64. Will, L.M. (1999). Human environmental interactions in upper Lapland Finland : Development of participatory research, Strategies Acta Borealia, 16(2) : 43-16.

65. Zhang, Z. (2014). Spatial point analysis of human settlement and geographical associations in Eastern Coastal China – A case study. International Journal of Environmental Research & Public Health, Vol. 11 (3), pp. 2818-2833. DOI: 10.3390/ij

❑❑❑